

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

कूका आन्दोलन KUKA MOVEMENT



विवरणिका BROCHURE



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख : 24 दिसम्बर, 2014
Date of Issue : 24 December, 2014

मूल्यवर्ग : 500 पैसा
Denomination : 500 p

मुद्रित डाक-टिकटें : 6 लाख*
Stamps Printed : 0.6 Million*

मुद्रण प्रक्रिया : वेट ऑफसेट
Printing Process : Wet Offset

मुद्रक : प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer : Security Printing Press,
Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

*एक लाख प्रस्तावक हेतु
*0.1 Million for proponent

मूल्य ₹ 5.00

KUKA MOVEMENT

For many years after the first war of Independence, in 1857, armed resistance against the British was witnessed in many parts of the country. Though the incidents of resistance were mostly local, it revealed the discontent against the foreign rulers.

The Kuka Movement marked the first major reaction of the people in the Punjab to the new political order initiated by the British after 1849. The Namdhari Movement, of which the Kuka Movement was the most important phase, aimed at overthrowing the British rule. The Namdharis were also known as "Kukas" because of their trademark style of reciting the "Gurbani" (Sayings/Teachings of the Guru). This style was in a high-pitched voice called "Kook" in Punjabi. Thus, the Namdharis were also called "Kukas".

Satguru Ram Singh, son of a poor carpenter, who was born on 3rd February, 1816 in a small village of Bhaini, around 7 kilometers away from Ludhiana, founded the Namdhari Sect on 12th April, 1857 at Bhaini Sahib. He asked his followers to boycott everything which bore the stamp of the British Government. In course of time, Baba Ram Singh became a secular chief of Kukas. He would go about surrounded by horsemen and held his court everyday. He appointed Governors and Deputy Governors to organize Kukas in different districts of the Punjab. He also inspired young men by giving them military training.

The Kuka Movement made the people aware of their serfdom and bondage. It evoked the feelings of self respect and sacrifice for the country. Within a few years, the followers of the Kuka Movement increased manifold. They called for boycott of educational institutions of British and laws established by them. They were rigid in their clothing and wore only hand-spun white attire. The Kuka followers actively propagated the civil disobedience.

It seemed inevitable that before long, a clash would occur between the Kukas and the British Government. The clash started in 1871 and culminated in the Kuka raid on Malerkotla on January 15, 1872. The Kuka outbreak of 1872 was visited by terrible punishment, which was equalled in brutality by few events in our history. A large number of Kuka prisoners were blown to death with cannons and their leader Baba Ram Singh was deported to Rangoon.

In 1920, the Kukas started publication of the paper 'Satyug', and in 1922, the daily, 'Kuka' was started. When the Non-Cooperation Movement was started by Gandhiji, the Kukas joined hands.

Department of Posts is happy to release a postage stamp to highlight the heroic deeds of the unsung heroes of the Kuka Movement.

Credits:-

Text : Based on the material furnished by the proponent.
Stamp/FDC/ Cancellation : Alka Sharma

कूका आन्दोलन

1857 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के कई वर्षों बाद, देश के अनेक हिस्सों में अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष हुए। हालांकि, ऐसे संघर्ष अधिकतर स्थानीय ही थे, परन्तु इनसे विदेशी हुकूमत को लेकर असंतोष की भावना मुखर हुई।

कूका आन्दोलन, अंग्रेजों द्वारा 1849 के बाद अपनाई गई राजनीतिक व्यवस्था के विरुद्ध पंजाब के लोगों का पहला आक्रामक विरोध था। कूका आन्दोलन, नामधारी आन्दोलन का सबसे महत्वपूर्ण चरण था। नामधारी आन्दोलन का उद्देश्य ब्रिटिश हुकूमत को उखाड़ फेंकना था। नामधारियों को ही "कूका" के नाम से जाना जाता था, क्योंकि नामधारी "गुरबानी" (गुरु के उपदेश/सीख) का उच्चारण अनूठे रूप में करते थे। ऊँची आवाज में उच्चारण की इस शैली को पंजाबी में "कूक" कहा जाता है। इसीलिए, नामधारियों को "कूका" भी कहा जाता था।

सतगुरु राम सिंह ने 12 अप्रैल, 1857 को भैणी साहिब में नामधारी पंथ की स्थापना की। सतगुरु राम सिंह एक गरीब बड़ई के पुत्र थे। उनका जन्म लुधियाना से लगभग 7 कि.मी. दूर भैणी नामक एक छोटे से गांव में 3 फरवरी, 1816 को हुआ। सतगुरु राम सिंह ने अपने अनुयायियों को हर उस वस्तु का बहिष्कार करने को कहा, जिस पर ब्रिटिश हुकूमत की छाप थी। समय के साथ, बाबा राम सिंह कूकाओं के धर्मनिरपेक्ष प्रमुख बन गए। वे घोड़े पर सवार होकर अन्य घुड़सवारों के साथ अपने क्षेत्र का भ्रमण करते थे और रोजाना अपनी अदालत लगाते थे। पंजाब के विभिन्न जिलों में कूकाओं को संगठित करने के लिए उन्होंने गवर्नरों और डिप्टी गवर्नरों की नियुक्ति की। उन्होंने युवाओं को भी प्रेरित किया और उन्हें फौजी प्रशिक्षण दिया।

कूका आन्दोलन ने लोगों को कृषि दास प्रथा और गुलामी के बारे में जागरूक किया। इस आन्दोलन ने आम लोगों में

स्वाभिमान और देश के प्रति बलिदान की भावना जाग्रत की। कुछ ही वर्षों में, कूका आन्दोलन के अनुयायियों की संख्या में कई गुना वृद्धि हो गई। इन लोगों ने अंग्रेजों के शैक्षिक संस्थानों और ब्रिटिश हुकूमत द्वारा बनाए गए कानूनों के बहिष्कार का नारा दिया। कूका आन्दोलनकारी अपनी पोशाक को लेकर कट्टर थे और केवल हाथ से बुना श्वेत वस्त्र ही धारण करते थे। कूका आन्दोलन के समर्थकों ने सविनय अवज्ञा का बढ़ चढ़ कर प्रसार किया।

कूकाओं और ब्रिटिश हुकूमत के बीच टकराव अवश्यभावी हो चुका था। यह संघर्ष 1871 में प्रारंभ हुआ और 15 जनवरी, 1872 को कूका समर्थकों ने मलेरकोटला पर हमला बोल दिया। 1872 के कूका आक्रमण का जवाब ऐसी नृशंसता से दिया गया, जिसकी तुलना इतिहास में बहुत कम घटनाओं से की जा सकती है। बड़ी संख्या में कूका कैदियों को तोपों से उड़ा दिया गया और उनके नेता बाबा राम सिंह को रंगून निर्वासित कर दिया गया।

1920 में कूका समुदाय ने "सतयुग" नामक एक पत्र की शुरुआत की और 1922 में "कूका" के नाम से एक दैनिक समाचार-पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया गया। गांधी जी ने जब असहयोग आन्दोलन का बिगुल फूँका, तो कूका समुदाय के लोग भी उसमें शामिल हो गए।

डाक विभाग, कूका आंदोलन के गुमनाम वीरों की शौर्य गाथाओं को रेखांकित करते हुए उनके सम्मान में डाक-टिकट जारी कर प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :-

पाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक-टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विरूपण : अलका शर्मा